भाषा शिक्षण की प्रणालियाँ

भाषा शिक्षण की विविध प्रणालियाँ

शिक्षक विभिन्न शिक्षणविधियों के ज्ञान से भाषा की शिक्षा देने में अपने आप को सक्षम महसूस करता है और शिक्षार्थी भी रोचकता से भाषा सीख जाते हैं। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति रोचक शिक्षण का प्रतिपादन करता है।शिक्षक विभिन्न शिक्षण प्रणालियों के ज्ञान से यथावत्तर तथा परिस्थितियों के अनुकूल उपयुक्त विधि के द्वारा भाषा शिक्षण में अधिकतम सफलता प्राप्त कर सकता है। शिक्षक जितने रुचिकर ढंग से विषय को प्रस्तुत करेगा। शिक्षार्थी उतनी ही तन्मयता के साथ श्रवण अनुकरण, अभ्यास से भाषा सहजता से सीख सकेगा। आज मनोवैज्ञानिक एवं प्रयोगों तथा खोजों के आधार पर शिक्षा एवं शिक्षण विधियों को नये-नये आयामों से देखा जाता है।

ड्यूची ने कहा है कि "शिक्षा जीवन के अनुभवों के माध्यम से जीवन की तैयारी है।"

फ्रोबेल के अनुसार "शिक्षकों द्वारा बालक को अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास का अवसर प्रदान करना चाहिए, शिक्षा का कार्य प्रतिबंध नहीं वरन् पथ प्रदर्शन है शिक्षा द्वारा विद्यार्थी के दैवी गुणों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।"

नवीन प्रयोगों के आधार पर जो शिक्षा प्रणालियां चल रही है, विशेष रूप से हिन्दी भाषा दृष्टिकोण से उनका वर्णन निम्नप्रकार है:

1. प्रत्यक्ष प्रणाली

2. खेल प्रणाली

3. अनुवाद विधि प्रणाली

4.संरचनात्मक प्रणाली (ढांचागत)

5. प्रोजेक्ट प्रणाली

6. मांटेसरी प्रणाली

7. डाल्टन विधि

1.<u>प्रत्यक्ष प्रणाली</u> :इस प्रणाली का विकास भाषा ज्ञान के प्राकृतिक आधार पर निर्धारित हुआ है। बच्चा अपनी मातृभाषा को बिना किसी के सिखाये स्वयं ही सुन सुन कर सीख लेता है, इसी को आधार बना कर मनोवैज्ञानिकों ने प्रणाली के लिए सिद्धान्त स्थिर किया, जिस तरह व्यक्ति मातृभाषा सीखता है। उसी प्रकार के वातावरण से किसी भाषा को अनायास ही विद्यार्थी सीख सकता है। वह भाषा को सुनता है उसका अनुकरण करता है।परिणामतः थोड़े ही दिनों में वह बिना किसी प्रकार के अतिरिक्त श्रम के या भाषा नियमों को रटे बिना ही बोलने लगता है।

<u>सीमाएँ</u>

1. प्रत्यक्ष प्रणाली से भाषा ज्ञान करने वाला व्यक्ति उस भाषा के मूल में क्षमता प्राप्त नहीं कर पाता क्योंकि व्यक्ति उस भाषा में सोचता नहीं है।

2. सोचने के लिए व्यक्ति के मस्तिष्क में शब्द और भाव पूर्ण सामंजस्य होना आवश्यक है।

3. नैसर्गिक सुविधाओं का अभाव रहता है क्योंकि ये मातृभाषा सीखते हुए ही उपलब्ध होती है।

4. कई भाषाओं के लिए तो मातृभाषा सीखने वाला वातावरण तैयार होने की बात के लिए सोचा भी नहीं जा सकता।

5.इस प्रणाली में उसी भाषा में भाषण का ही अपना चरमलक्ष्य बनाए रखना ही दोषपूर्ण है।

कुछ सीमाएं होते हुए भी यह विधि सुगम है। यूरोप में ग्रीक तथा लेटिन के शिक्षण में इस विधि ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। हिन्दी शिक्षण के लिए इस पद्धति से विद्यार्थियों को भाषा में निपुणता हासिल करने में देरी नहीं लगेगी। क्योंकि कुछ मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि शिक्षण वहीं प्रभावशाली है, जिसमें ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग हो, नेत्रों की अपेक्षा जीभ व कानों की सक्रियता से भाषा को सुगमता से सीखा जा सकता है। इसीलिये इस विधि में मौखिक कार्य पर अधिक बल दिया जाता है|

2. संरचनात्मक उपागम (ढांचागत प्रणाली):-संरचना का अर्थ है- बनावट: हर भाषा का व्यवस्थित क्रम अर्थात बनावट होती है। उस बनावट को समझाते हुए भाषा सिखाना संरचनात्मक प्रणाली कहलाता है। इसमें वाक्यों की संरचनाओं पर विशेष बल दिया जाता है। इससे भाषा शिक्षण के लिए मौखिक कार्य व अभ्यास पर बल देना होता है। इस प्रणाली में भाषा के कुछ प्रमुख शब्दों एवं समान वाक्यों के माध्यम से भाषा शिक्षण आरम्भ होता है। शिक्षा विदों का इस प्रणाली के लिए मानना है कि कुछ निश्चित शब्दों तथा वाक्यों के ढांचों का प्रयोग करते करते शिक्षार्थी तीन या चार वर्ष में भाषा सीख जाता है। आवश्यक है भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में इन संरचनाओं को समझने का बड़ा महत्व है। सभी भाषाओं में पदों का अपना एक क्रम होता है। अंग्रेजी वाक्य में पदों को कर्ता, क्रिया और कर्म में व्यवस्थित किया गया है परन्तु हिन्दी में यह क्रम कर्ता कर्म और क्रिया होता है। हिन्दी वाक्य में पदक्रम का नियम है कि पहले कर्त्ता, फिर कर्म या पूरक और अंत में क्रिया रखते हैं। जेसे । राम पुस्तक पढ़ता है। यह नहीं होता पुस्तक पढ़ता है राम वाक्यों में पदों को उचित स्थान का विचार पदक्रम कहलाता है। वाक्य रचना में इस का ध्यान रखना आवश्यक है कई बार शब्दों के स्थानांतर से वाक्य में अर्थातर हो जाता है जैसे हम भी शहर को जाते हैं, हम शहर को तो जाते हैं, इस तरह भाषा की संरचना पर ध्यान दिला कर भाषा शिक्षण हो सकता है। इसमें अभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

इसमें मौखिक कार्य को भाषा शिक्षण का आधार बनाया जाता है । याक्यों के गठन को कण्ठस्थ कराया जाता है। शब्दों का अर्थ एवं संरचनाओं का ज्ञान और अभ्यास को ठीक परिस्थिति और सन्दर्भ को समझते हुए करवाया जाता है।

सीमाए

1. इसमें शब्द रचना उपेक्षित रहती है। वाक्य गठन पर अधिक बल दिया जाता है।

2. संरचनाओं को निर्माण और अभ्यास में बहुत समय एवं शक्ति व्यय होती है जो कि व्यवहारिक नहीं है। 3. सभी प्रकार के विषय को संरचनाओं के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता।

4. अधिक अभ्यास से नीरसता आती है।

निष्कर्षः

यह हिन्दी शिक्षण उपयोगी विधि तो हे पर पूर्ण नहीं, भाषा शिक्षण में अभ्यास से सक्रियता भी लाती है। अंग्रेजी भाषा शिक्षण की यह सर्वोपयुक्त प्रणाली मानी जाती है यह पद्धति भाषा विशेषज्ञों द्वारा अनेक शोध प्रयोग एवं अनुभव का परिणाम है। इसमें शिक्षार्थी भाषा के संरचनात्मक रूपों का अधिक अभ्यास से भाषा स्वतः सीख लेने में सक्षम हो जाता है। हिन्दी भाषा के दृष्टि से आधारभूत संरचनाओं एवं शब्दावली के अभाव में शिक्षण नुव्यवस्थित नहीं हो पाता क्योंकि हिन्दी संरचना वचन और लिंग, आदि से जुड़ी कई कठिनाइयां है।

3. संश्लेषणात्मक विधि:

इसके अंतर्गत दो विधियों आती हैं।

1.अक्षर बोध विधि।

2. ध्वनि साम्य विधि।

1. अक्षर बोध विधि: यह एक प्रभावी विधि और संसार में सबसे पुरानी विधि भी है। प्राथमिक स्तर पर इसी विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अनुसार बच्चों को पहले स्वर - व्यंजन तथा मात्राएँ व संयुक्त अक्षरों का ज्ञान करवाया जाता है। अध्यापक अक्षर को पढ़ता है और विद्यार्थी उस अक्षर की ध्वनि को समझते हुए उसका अनुकरण करता है।

<u>गुण :</u>

(i)अक्षर बोध कराना वाचन करवाने के लिए अति आवश्यक है। इसके बिना कोई भी भाषा सीखना अति कठिन कार्य होता है।

(ii) एक-एक अक्षर की ध्वनि को समझते विद्यार्थी उसका अनुकरण करने का प्रयास करता है।

(iii)समझने के बाद उसका उसी तरह अभ्यास जारी रहता है। अध्यापक उसका उचित मार्गदर्शन करता रहता है।

<u>सीमाए</u>

(i) विद्यार्थी को अक्षर निरर्थक व निजीव से लगते हैं, क्योंकि उसका न तो उन्हें प्रयोजन ज्ञात है, न ही

कोई उत्सुकता लगती है।

(ii) विद्यार्थी का उन अक्षरों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। वे रुचि लेकर उनको देखना भी नहीं चाहते।

(iii) यह विधि अवैज्ञानिक है, क्योंकि भाषा की इकाई वाक्य तथा शब्द है. अक्षर या वर्ण नहीं। परंतु इस

विधि में भाषा शिक्षण का आधार हम वर्ण या अक्षर मानते हैं, इसलिए यह सर्वमान्य भी नहीं है।

(iv)एक-एक अक्षर को जोड़ कर शब्द को अटक अटक कर पढ़ने का अभ्यास होने लगता है। जैसे क + म + ल= कमल यह आदत वाचन की गति बढ़ाने में बाधक हो सकती है।

(v) इस विधि से अक्षर बोध कराने में पर्याप्त समय भी लगता है। अध्यापक और विद्यार्थी को

अत्याधिक धैर्यपूर्वक चलना पड़ता है जो कि कठिन कार्य लगता है।

2. ध्वनि साम्य विधि: इस विधि से एक जैसी ध्वनियों वाले शब्दों को एक ही लय में बोला जाता है।

जैसे मदन, वदन, सगन

नल, जल, मल

नाक, काम, राम आदि ।

<u>गुण :</u>

(i) इसमें ध्वनियों का खूब अभ्यास हो जाता है। उनका उच्चारण स्थिर होने लगता है।

(ii) इन्हीं को लिखित रूप देना सरल हो जाता है। ध्वनियों की साम्यता के कारण मस्तिष्क में जल्दी छाप पड़ जाती है।

(iii) ध्वनियों की स्पष्टता जल्दी हो जाती है, जिससे पढ़ने में रुचि बनती है और यह रुचि ही पढ़ने व वाचन करने को प्रेरित करती है।

<u>दोष:</u>

(i) यह विधि अधिक स्वाभाविक नहीं लगती, क्योंकि कई बार एक शब्द को सिखाने के लिए एक जैसी55

ध्वनियों वाले शब्द मिलने मुश्किल हो जाते हैं।

(ii) नित्य प्रति प्रयोग में आने वाले शब्दों की जगह कई बार अव्यावहारिक शब्द लेने पड़ते हैं।

(iii) इस विधि में शब्दों, वाक्य खण्डों और वाक्यों के अर्थ पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता |